

Chapter-5: बदलती हुई सांस्कृतिक परम्पराएँ

पुनर्जागरण :-

- एक फ्रांसीसी शब्द जिसका अर्थ है पुनर्जन्म पुनर्जागरण की शुरुआत सबसे पहले इटली में हुई। फिर यह रोम , वेनिस और फ्लोरेंस में शुरू हुआ।
- पुनर्जागरण ने लोगों में समानता की भावना पैदा की और समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और रिवाजों पर हमला किया।
- पुनर्जागरण काल के साहित्य ने लोगों की राजनीतिक सोच में एक महान परिवर्तन लाया।

पुनर्जागरण पुरुष :- कई हितों और कौशल वाला व्यक्ति।

दस्तावेजों का दस्तावेज :-

चर्च द्वारा जारी किया गया एक दस्तावेज जो उसके सभी पापों के धारक को अनुपस्थित करने के लिए एक लिखित वादा की गारंटी देता है।

प्रिंटिंग प्रेस :-

- 1455 में , गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया गया था ।
- यूरोप में 1477 में कैक्सटन द्वारा पहला प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया गया था ।

प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार से पुस्तकों की मात्रा बढ़ गई । इसने शिक्षा के प्रसार में भी मदद की ।

लियोनार्डो द विन्सी :-

- लियोनार्डो द विन्सी सबसे महान चित्रकारों में से एक थे । उनका जन्म वर्ष 1452 में फ्लोरेंस में हुआ था ।
- लियोनार्डो द विन्सी एक चर्चित कलाकार था । इसकी अभिरूचि वनस्पति विज्ञान , शरीर रचना विज्ञान से लेकर गणित शास्त्र और कला तक विस्तृत

थी इन्होंने ही मोना लीसा और दी लास्ट सपर जैसे चित्रों की रचना की थी ।

- मोना लिसा और द लास्ट सपर लियोनार्डो द विन्सी की सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग थीं ।

गैलीलियो :-

गैलीलियो इटली का एक महान वैज्ञानिक था उसने दूरबीन यन्त्र का आविष्कार किया और खगोल शास्त्र के अनेक तथ्यों और रहस्यों का पता लगाया ।

यीशु की सोसायटी:-

1540 में इग्नेसियस लोयाला द्वारा यीशु की सोसायटी की स्थापना की गई थी । इसने प्रोटेस्टेंटिज़्म का मुकाबला करने का प्रयास किया ।

एन्ड्रयूज वेसेलियस :-

बेल्जियम मूल के एन्ड्रयूज वेसेलियस (1514 - 1564) पादुआ विश्व विद्यालय में आयुर्विज्ञान के प्रोफेसर थे । वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सूक्ष्म परीक्षाओं के लिये मानव शरीर की चीर फाड़ प्रारम्भ की ।

मानवतावाद:-

- मानवतावाद 14 वीं शताब्दी में इटली में शुरू किए गए आंदोलनों में से एक था । पेट्रार्क को 'मानवतावाद के पिता के रूप में जाना जाता है । उन्होंने पादरी के अंधविश्वासों और जीवन शैली की आलोचना की ।
- मानवतावादी लोगों का तर्क था कि " मध्य युग में चर्च ने लोगों की सोच को इस तरह जकड़ कर रखा था कि यूनान और रोमन वासियों का समस्त ज्ञान उनके दिमाग से निकल चुका था ।
- मानवतावादी मानते थे कि मनुष्य को ईश्वर ने बनाया है , लेकिन उसे अपना जीवन मुक्त रूप से चलाने की पूरी आजादी है । मनुष्य को अपनी खुशी इसी विश्व में वर्तमान में ही ढूँढ़नी चाहिए ।

ट्रेडों के फलने - फूलने के कारण मिलान , नेपल्स , वेनिस और फ्लोरेंस को व्यापार केंद्रों का दर्जा प्राप्त हुआ ।

मानवतावादी विचारों के अभिलक्षण :-

- मानवतावाद विचारधारा के अंतर्गत मानव के जीवन सुख और समृद्धि पर बल दिया जाता था ।
- मानवतावाद के माध्यम से यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि मानव , धर्म और ईश्वर के लिए ही न होकर हमारे अपने लिए भी है ।
- मानव का अपना एक अलग विशेष महत्व है ।
- मानव जीवन को सुधारने व उसके भौतिक जीवन की समस्याओं का समाधान करने पर बल देना चाहिए , मानव का सम्मान करना चाहिए । इसका कारण यह है कि मानव ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं में से एक है ।
- पुनर्जागरण काल में महान कलाकारों की कृतियों और मूर्तियों में जीसस क्राइस्ट को मानव शिशु के रूप में और मेरी को वात्सल्यमयी माँ के रूप में चित्रित किया गया है । नि : संदेह मानवतावादी रचनाओं में धार्मिक भावनाओं का हास पाया जाता है ।
- पुनर्जागरण काल में महान साहित्यकारों ने अपनी कृतियों में प्रतिपाद्य मानव की भावनाओं , दुर्बलताओं और शक्तियों का विश्लेषण किया है । उन्होंने अपनी कृतियों के केंद्र के रूप में धर्म व ईश्वर के स्थान पर मानव को रखा । इस युग की प्रमुख साहित्यिक कृतियों में डिवाइन कमेडी , यूटोपिया , हैमलेट आदि प्रसिद्ध हैं ।

मानवतावादी विचार की विशेषताये :-

- मानवतावादी वे गुरु थे जिन्होंने व्याकरण , अलंकार , काव्य , इतिहास और नैतिक दर्शन पढ़ाया ।
- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्राचीन यूनानियों और रोमन लोगों की संस्कृति के संदर्भ में कानून का अध्ययन किया जाना चाहिए ।
- उन्होंने सिखाया कि व्यक्ति स्वयं अपने जीवन को धर्म , शक्ति और धन के अलावा अन्य माध्यमों से आकार दे सकते हैं ।

- इंग्लैंड में थॉमस मोरे और हॉलैंड में इरास्मस जैसे ईसाई मानवतावादियों ने आम लोगों से पैसे निकालने के लिए चर्च और इसके लालची रिवाजों की आलोचना की ।
- कुछ मानवतावादियों का मानना था कि अधिक धन पुण्य था और खुशी के खिलाफ नैतिक दोषी बनाने के लिए ईसाई धर्म की आलोचना की ।
- वे यह भी मानते थे कि इतिहास का अध्ययन मनुष्य को पूर्णता के जीवन के लिए प्रयास करता है । उन्होंने पंद्रहवीं शताब्दी की अवधि के लिए ' आधुनिक ' शब्द का इस्तेमाल किया ।

सोलहवीं शताब्दी में महिलाओं की स्थिति :-

- महिलाओं को कारोबार में परामर्श आदि देने का अधिकार नहीं था । दहेज का प्रबंध न होने के कारण लड़कियों को भिक्षुणी बना दिया जाता था ।
- सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी कम थी । व्यापारी परिवारों में महिलाओं को दुकानों को चलाने का अधिकार था ।
- कुछ महिलाओं ने बौद्धिक रूप से रचनात्मक कार्य किये जैसे : वेनिस निवासी कसान्द्रा फेदले जो यूनानी और लातिनी भाषा की विद्वान थी ।
- मंटुआ की मार्चिसा ईसाबेला दि इस्ते जिन्होंने अपने पति की अनुपस्थिति में अपने राज्य पर शासन किया ।

इटली की वास्तुकला :-

- पंद्रहवीं शताब्दी में रोम के शहर के पुनरुद्धार के साथ इतालवी वास्तुकला विकसित हुई । रोम में खंडहरों को पुरातत्वविदों द्वारा सावधानीपूर्वक खुदाई की गई थी । इसने वास्तुकला में एक नई शैली को प्रेरित किया , शाही रोमन शैली का पुनरुद्धार - जिसे अब ' शास्त्रीय ' कहा जाता है ।
- पंद्रहवीं शताब्दी में रोम नगर को अत्यंत भव्य रूप से बनाया गया । यहाँ अनेक भव्य भवनों व इमारतों का निर्माण किया गया ।
- इटली की वास्तुकला के प्रारूप हमें गिरजाघरों , राजमहलों और किलों के रूप में दिखाई देते हैं ।

- इटली की वास्तुकला की शैली को शास्त्रीय शैली कहा जाता था । शास्त्रीय वास्तुकारों ने इमारतों को चित्रों , मूर्तियों और विभिन्न प्रकार की आकृतियों से सुसज्जित किया ।
- इटली की वास्तुकला की विशिष्टता के रूप में हमें भव्य गोलाकार गुंबद , भवनों की भीतरी सजावट , गोल मेहराबदार दरवाजे आदि दिखाई देते हैं ।

इस्लामी वास्तुकला :-

- इस्लामी वास्तुकला ने इमारतों , भवनों व मस्जिदों की सजावट के लिए ज्यामितीय नक्शों और पत्थर में पच्चीकारी के काम का सहारा लिया ।
- धार्मिक इमारतें इस्लामी वास्तुकला का सबसे बड़ा बाहरी प्रतीक थीं । स्पेन से लेकर मध्य एशिया तक की मस्जिदों , तीर्थस्थलों और मकबरों में एक ही मूल डिजाइन - मेहराब , गुंबद , मीनारें और खुले आंगन दिखाई दिए - और मुसलमानों की आध्यात्मिक और व्यावहारिक जरूरतों को व्यक्त किया ।
- इस्लामी वास्तुकला इस काल में अपनी चरम सीमा पर थी । विशाल भवनों में बल्ब के आकार जैसे गुंबद , छोटी मीनारें , घोड़े के खुरों के आकार के मेहराब और मरोड़दार (घुमावदार) खंभे आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं ।
- ऊँची मीनारों और खुले आँगनों का प्रयोग हमें इस्लामी वास्तुकला के भवनों में नज़र आता है ।

इतालवी शहर मानवतावाद के विचारों का अनुभव करने वाले पहले व्यक्ति :-

इतालवी शहर मानवतावाद के विचारों का अनुभव करने वाले पहले व्यक्ति थे क्योंकि सबसे पहले यूरोपीय विश्वविद्यालय वहां स्थापित किए गए थे । पडुआ और बोलोग्ना विश्वविद्यालय ग्यारहवीं शताब्दी से कानूनी अध्ययन के प्रमुख केंद्र थे ।

- इसलिए , कानून अध्ययन का एक लोकप्रिय विषय था । हालाँकि , इसमें एक बदलाव था ; अब , यह पहले रोमन संस्कृति के संदर्भ में अध्ययन किया गया था ।

- इस शैक्षिक कार्यक्रम ने सुझाव दिया कि धार्मिक शिक्षण केवल ज्ञान नहीं दे सकता है, और समाज और प्रकृति के अन्य क्षेत्रों का विश्लेषण किया जाना चाहिए। यह संस्कृति 'मानवतावाद' थी।